January, 2022 issue

IKMG पत्रिका

IKMG LTD
Connecting people who care..

7th edition

Core Members

Raj Khanna

Founder Chairman - IKMG

+44 7973386826

Patrons

Kamla Seth

Patron

+91 9899109444

Rakesh Tandon

Patron

+91 9839211697

Shashi Mehrotra

Patron

+91 9935680727

Directors

Akhil Tandon

Director

+91 8853000168

Dinesh Tandon

Director & Caretaking President - Kanpur

+91 7309121921

Kunu Kapoor

Director & President – Kannauj

+91 9450046636

Directors listed in alphabetical order

Manisha Mehrotra

Director & President – Meerut

+91 7351833317

Mukul Varma

Director

+91 9935246412

Paras Tandon

Director

+91 9616940402

Varun Mehrotra

Director

+91 8840760368

Directors listed in alphabetical order

Presidents - India Chapters

Aditi Mehrotra

President - Youth Wing

+91 8795426426

Mala Mehrotra

President - Vrindavan & Mathura

+91 9690272453

Mita Kakkar

President - Jaipur

+91 9602606226

Neha Kapoor Mehrotra

President - Pilibhit

+91 9457534973

Nishu Mahendra

President - Noida

+91 9911437041

Presidents listed in alphabetical order

Prachi Kapoor

President - Mumbai

+91 9769215340

Rachna Tandon

President - Women’s wing - Lucknow

+91 9415019527

Rajesh Khanna

President - Ajmer

+91 9214984495

Rakhi Chopra

President - Lakhimpur

+91 9451238077

Ranjan Jalote

President - Varanasi

+91 7007450271

Renu Mehrotra

President - Biswan

+91 9454617178

Presidents listed in alphabetical order

Rohit Mehrotra

President - Prayagraj

+91 9415215082

Santosh Kapoor

President - Aurangabad

+91 9370651803

Shashi Mehrotra

President Women's wing–Kanpur & Mentor - IKMG

+91 9935680727

Shalini Malhotra

President - Bareilly

+91 7983561554

Sharad Kapoor

President - Lucknow

+91 9415584459

Sharad Mehrotra

President - Gurgaon & Faridabad

+91 9958363661

Presidents listed in alphabetical order

Shreyas Seth

President - Kolkata

+91 9903744433

Shobhna Mehrotra

President - Sitapur

+91 9450795271

Shonu Mehrotra

President - Agra

+91 9319124445

Shubham Kapoor

President - Ramnagar & Kashipur

+91 7906730514

Sourabh Tandon

President - Delhi

+91 7503015186

Vimal Mehra

President – Jodhpur

+91 9772200200

Presidents listed in alphabetical order

Presidents - International Chapters

Anamika Khanna

President - Hongkong

+852 93252274

Anirudh Khanna

President - Germany

+49 15254383319

Gaurav Mehrotra

President - USA

+1 6788344405

Kanhaiya Mehrotra

President – Canada

+91 9411114424

Priti Mehrotra

President – Australia

+61 432152575

Suman Kapoor

President - New Zealand & Fiji

+64 211801234

Presidents listed in alphabetical order

Other office bearers

Arti Mehrotra

Sr. Vice President – Women's Wing Kanpur

+91 9335048505

P.C. Seth

Sr. Vice President - Kanpur

+91 9839071115

Sapna Kakkar

Sr. Vice President - Lakhimpur

+91 9451321357

Ankit Mehra

Vice President - Mussoorie & Dehradoon

+91 8218817243

Chander Mohan

Vice President - Ambala

+91 8607552424

SVPs, VPs and other office bearers listed in alphabetical order

Chhavi Mehrotra

Vice President - Agra

+91 9897586030

Kapil Malhotra

Vice President - Bareilly

+91 9557174444

Kuldeep Arora

Vice President - Vrindavan

+91 9837059648

Mamta Sethi

Vice President - Meerut

+91 8650903939

Naresh Burman

Vice President - Mathura

+91 9897107775

Nayan Mehrotra

Vice President - Youth Wing and Gurgaon & Faridabad

+91 8377956384

Sr. Vice Presidents and VPs listed in alphabetical order

Nitin Mehrotra

Vice President & Media Head - Kanpur

+91 9839032239

Poonam Puri

Vice President - Lakhimpur

+91 9532265763

Reena Mehrotra

Vice President - Kannauj

+91 9918533774

Rupa Puneet Bhalla

Vice President - Biswan

+91 7985450407

Ruchita Kapoor

Vice President – Women's Wing Kanpur

+91 9453027034

Rina Burman

Vice President - Kolkata

+91 9831021581

Vice Presidents listed in alphabetical order

Sangeeta Mehrotra

Vice President – Women's Wing Kanpur

+91 9559666499

Shivam Mehrotra

Vice President – Ghaziabad

+91 8860180000

Suchita Meena

Vice President – Delhi

+91 9811055003

Utkarsh Mehrotra

Vice President - Varanasi

+91 8896102175

Vikas Kapoor

Vice President – Jodhpur

+91 9462034715

Rachna Mehrotra

Treasurer - Kannauj

+91 9935436959

Rama Kant Tandon

Treasurer - Lucknow

+91 9839104840

Vice Presidents listed in alphabetical order

Shubh Tandon

Treasurer - Noida & Ghaziabad

+91 9868400059

Manju Mehrotra

Secretary - Kannauj

+91 9838338484

Pankaj Mehrotra

Secretary – Noida & Ghaziabad

+91 9899248247

Sandeep Kakkar

Secretary – Kanpur

+91 9235312312

Sanjay Tandon

Secretary – Lucknow

+91 8318919237

Jayant Mehrotra

Mentor

+91 9867713756

Savita Chopra

Mentor - Lakhimpur

+91 9451687226

From the Chairman’s desk

Writer: Mr. Raj Khanna, London

I sincerely wish all a very happy and prosperous New Year!

May 2022 ring all the happiness and may all your dreams and wishes come true.

Bless you all!

Mr. Raj Khanna is the Founder Chairman of IKMG and resides in London. He is committed to social service, philanthropy and well being of the society.

Table of Contents / विषय सूची

S. No.	Content	Page No.
1	नव वर्ष की शुरुआत करें कुछ ऐसे	18
2	नव वर्ष	23
3	नए वर्ष के संकल्प	25
4	जय श्री राम...जय हनुमान	26
5	महाभारत	30
6	माँ	35
7	वाणी प्रहार	37
8	ज़िन्दगी की गहराई को पढ़ कर पाया	39
9	नियति	44
10	खामोशी को जुबां देने की एक छोटी सी कोशिश	73
11	एक पत्र	75
12	हमारा वर्तमान	77
13	बस इतनी सी आरजू	79
14	IKMG Matrimonial Group	81
15	Kitchen Tales	83
16	The Art Corner	87

नव वर्ष की शुरुआत करें कुछ ऐसे

लेखिका - श्रीमती शोनू मेहरोत्रा, आगरा

नए साल की शुरुआत को नव आरंभ के तौर पर देखा जाता है और किसी भी नए प्रकार की शुरुआत से पहले गणपति की पूजा करना बेहद शुभ माना जाता है। इसलिए नव वर्ष के पहले दिन आपको अपने घर में गणेशजी की पूजा करनी चाहिए। वह सभी देवी-देवताओं में प्रथम पूजनीय होते हैं। घर में नव वर्ष के दिन प्रथम पूजन गणेशजी का करें और साल भर खुशहाली और सुख-समृद्धि पाएं।

1) नव वर्ष के पहले दिन घर में शंख लेकर आएं। पहले दिन शंख की ध्वनि करें और पूजा घर में रखें। ऐसा करने से मां लक्ष्मी आप पर प्रसन्न होती हैं और सौभाग्य आपके घर में सदैव बना रहता है। ऐसे घर में कभी भी पैसे की तंगी नहीं रहती।

2) अगर आप चाहते हैं कि पूरे साल आपके वैवाहिक जीवन में कोई कष्ट न आए और समय अच्छे से गुजरे तो नव वर्ष की शुरुआत पर घर में विष्णुजी और लक्ष्मीजी की पूजा करें। साथ ही कमल और अन्य फूल चढ़ाएं।

3) नए साल के पहले दिन आपको अपने घर के आंगन में तुलसी का पौधा लगाना चाहिए। साथ ही इस तुलसी के पेड़ की मिट्टी में एक रुपये का सिक्का भी दबा दें। इससे आपके घर में मां लक्ष्मी का आगमन होगा और आपको पूरे साल पैसों की तंगी नहीं हो सकती।

4) नव वर्ष पर आप चाहें तो अपने घर में एक नई शुरुआत कर सकते हैं। अगर आप रोज गुगल की धूनी घर में दें तो आपके घर से सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा का नाश हो जाएगा।

5) नए साल के पहले दिन मां लक्ष्मी के किसी मंदिर में जाकर या फिर घर में ही मां लक्ष्मी की मूर्ति के सामने गाय के घी का दीपक जलाएं और कमल के 5 पुष्प भी अर्पित करें। ऐसा करने से देवी लक्ष्मी आप पर प्रसन्न होंगी और आपके परिवार के लोगों पर अपना आशीर्वाद बनाकर रखेंगी। परिवार के सभी लोगों की तरक्की होती रहेगी।

6) वर्ष के पहले दिन आपको कुछ दान पुण्य भी जरूर करना चाहिए। गाय को प्रथम रोटी दें , पितरों के नाम का भोजन निकालें , कुत्तों और पक्षियों व जरूरतमंद श्रीहीन लोगों को दान अवश्य करें ।

7) नव वर्ष पर प्रातः गुरु को व माता पिता को नमन कर आशीर्वाद अवश्य लें ।

8) बहुत लोग अपने घर में कछुआ रखते हैं लेकिन ज्यादातर वो मिट्टी या लकड़ी जैसी चीजों से बना होता है। घर में खुशहाली और सुख-समृद्धि लाने के लिए आप घर में धातु से बने कछुए को जगह दे सकते हैं। नया साल शुरू होने से पहले आप पीतल, कांसे या चांदी से बने कछुए को अपने घर लाएं ये आपकी किस्मत के दरवाजे खोलने में मदद करेगा।

9) चांदी का हाथी भी आप नव वर्ष शुरू होने से पहले अपने घर में रख सकते हैं, लेकिन ये हाथी ठोस चांदी का होना चाहिए। वास्तु शास्त्र के अनुसार इसका बेहद अच्छा प्रभाव घर पर होता है और राहु व केतु का बुरा प्रभाव समाप्त होने लगता है। इसको घर में रखने से व्यापार में बढ़ोत्तरी होती है और नौकरी में तरक्की होने लगती है। इसके साथ ही घर में शांति व सुख-समृद्धि बनी रहती है।

10) मोरपंख को भी आप नया साल शुरू होने से पहले अपने घर में रख सकते हैं। मोरपंख को बेहद शुभ और चमत्कारिक माना जाता है। वास्तु शास्त्र के अनुसार मोरपंख को घर में रखने से भाग्य के मार्ग में आने वाली सभी दिक्कतें दूर हो जाती है पर एक साथ कई सारे मोरपंख रखने की जगह एक से तीन मोरपंख ही घर में रखने चाहिए।

11) मोतीशंख को भी आप नए साल से पहले अपने घर में जगह दे सकते हैं। मोतीशंख को विधि-विधान के साथ पूजन करके तिजोरी या पैसे रखने वाली जगह पर रखने से घर में धन-सम्पदा का वास रहता है। इससे बिजनेस और नौकरी में तरक्की होती है और धन लाभ होता है।

12) तोते का चित्र या मूर्ति को भी आप अपने घर में जगह दे सकते हैं। वास्तु शास्त्र के अनुसार तोते की तस्वीर को उत्तर दिशा में लगाने से घर में खुशहाली आती है। साथ ही बच्चों का इंट्रेस्ट भी पढ़ाई में बढ़ता है और किस्मत के दरवाजे खुलने लगते हैं।

13) नव वर्ष के पहले दिन घर में गौमूत्र, नमक तथा फिटकरी मिलाकर पोंछा अवश्य लगाएं ताकि नेगेटिव एनर्जी का खात्मा होकर पॉजिटिव एनर्जी सभी दिशाओं से उत्पन्न हो।

14) वृक्ष, पौधे लगाकर उनकी सेवा का संकल्प करें। अपने नक्षत्र तथा राशि के अनुसार वृक्षारोपण अवश्य करें।

15) जिन व्यक्तियों को कर्ज से राहत न मिल रही हो या खर्च ज्यादा और इनकम कम हो, वे लक्ष्मी जी का कोई भी मंत्र का जाप नए साल के पहले दिन से प्रारंभ कर दें। हवन इत्यादि कर ऐश्वर्य, धन लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

Dr. Shonu Mehrotra resides in Agra and is an astro, Vastu, numerology & occult science expert. She is a social activist and runs an NGO called Sharan Sewa Samiti.

नव वर्ष

लेखिका - श्रीमती प्रिया मेहरोत्रा, लखीमपुर

आरंभ है नूतन वर्ष का प्रारंभ है,

गमन पथ पर खड़ा पुरातन वर्ष है,

आतुरता है आगमन की, समक्ष हमारे नव वर्ष है,

भ्रमित है मन ,भावनाएं कुंठित हैं, पर हृदय में भरा हर्ष है।।

सोचती हूं ,पुलकित रहे यह मन मेरा ,

ना आए विचार बीते वक्त का,

चाहती हूं कर लूं महफूज मुस्कान सबकी ,

मांगती हूं बस सुकून सबका,

ऐसा हो स्वागत कुछ नव वर्ष का। आरंभ है नववर्ष का प्रारंभ है।

हो जाए प्रज्वलित सवर्णित धरा ये,

कमी ना हो चिरागों की, घर हर रोशन रहे।

उतर आए यह ब्रह्मांड सारा धरा पर ,

पृथ्वी पर ना अब कोई कमी रहे,

ऐसा हो नव वर्ष ऐसा ही हो यह नव वर्ष ,

जीव हर सुरक्षित रहे।

आरंभ है नव वर्ष का प्रारंभ है। गमन पथ पर खड़ा पुरातन वर्ष है।

आतुरता है आगमन की समक्ष हमारे नव वर्ष है।।

प्रिया मेहरोत्रा लखीमपुर (यूपी) से, आप जीवन के हर पहलू पर लिखना पसंद करती हैं, अपनी भावनाओं को कविता की पंक्तियों में उतारने की पूरी कोशिश करती हैं । दूसरों की सहायता करना और उनकी भावनाओं को पन्ने पर उतारना आपका जुनून बन चुका है।।

नए वर्ष के संकल्प

लेखिका - श्रीमती रीना बर्मन, कोलकाता

हम देखते हैं कि पाश्चात्य देशों में नए साल का संकल्प लेने की परम्परा काफी पहले से मौजूद है पर अब हमारे यहाँ भी यह रिवाज है।

2022 साल आशा है नए रूप में आएगा।

संकल्प हों:-

1- शारीरिक एवं मानसिक सेहत पर ध्यान केंद्रित करें।

2- अनेक प्रकार के कार्यक्रम आयोजित न कर जो करें उन्हें पूर्ण रूप से करें।

3- नौ हजार से अधिक सदस्य हैं सभी 50 रुपए महीने Ikmg account में आवश्यक रूप से जमा करें तो सही है या जनवरी में 600 रुपए जमा करें।नियम सभी के लिए एक सा हो।

4- अधिक से अधिक सदस्य कार्यक्रमों में सक्रिय भाग लें।

Mrs. Rina Burman was a teacher in a reputed school of Kolkata. Her hobbies include reading, writing, stage performance and music. She supports IKMG in various areas.

जय श्री राम...जय हनुमान

लेखक - श्री पवन मेहरोत्रा, आगरा

हनुमान जी की पत्नी के साथ दुर्लभ फोटो

कहा जाता है कि हनुमान जी के उनकी पत्नी के साथ दर्शन करने के बाद घर में चल रहे पति पत्नी के बीच के सारे तनाव खत्म हो जाते हैं।

आंध्र प्रदेश के खम्मम जिले में बना हनुमान जी का यह मंदिर काफी मायनों में खास है। यहां हनुमान जी अपने ब्रह्मचारी रूप में नहीं बल्कि गृहस्थ रूप में अपनी पत्नी सुवर्चला के साथ विराजमान हैं।

हनुमान जी के सभी भक्त यही मानते आए हैं कि वे बाल ब्रह्मचारी थे और वाल्मीकि, कम्भ, सहित किसी भी रामायण और रामचरित मानस में बालाजी के इसी रूप का वर्णन मिलता है। लेकिन पराशर संहिता में हनुमान जी के विवाह का उल्लेख है। इसका सबूत है आंध्र प्रदेश के खम्मम जिले में बना एक खास मंदिर जो प्रमाण है हनुमान जी की शादी का।

यह मंदिर याद दिलाता है रामदूत के उस चरित्र का जब उन्हें विवाह के बंधन में बंधना पड़ा था। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि भगवान हनुमान जी बाल ब्रह्मचारी नहीं थे। पवनपुत्र का विवाह भी हुआ था और वो बाल ब्रह्मचारी भी थे।

कुछ विशेष परिस्थितियों के कारण ही बजरंगबली को सुवर्चला के साथ विवाह बंधन में बंधना पड़ा। दरअसल हनुमान जी ने भगवान सूर्य को अपना गुरु बनाया था।

हनुमान, सूर्य से अपनी शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। सूर्य कहीं रुक नहीं सकते थे इसलिए हनुमान जी को सारा दिन भगवान सूर्य के रथ के साथ साथ उड़ना पड़ता और भगवान सूर्य उन्हें तरह-तरह की विद्याओं का ज्ञान देते। लेकिन हनुमान जी को ज्ञान देते समय सूर्य के सामने एक दिन धर्म संकट खड़ा हो गया।

कुल 9 तरह की विद्या में से हनुमान जी को उनके गुरु ने पांच तरह की विद्या तो सिखा दी लेकिन बची चार तरह की विद्या और ज्ञान ऐसे थे जो केवल किसी विवाहित को ही सिखाए जा सकते थे।

हनुमान जी पूरी शिक्षा लेने का प्रण कर चुके थे और इससे कम पर वो मानने को राजी नहीं थे। इधर भगवान सूर्य के सामने संकट था कि वह धर्म के अनुशासन के कारण किसी अविवाहित को कुछ विशेष विद्याएं नहीं सिखला सकते थे।

ऐसी स्थिति में सूर्य देव ने हनुमान जी को विवाह की सलाह दी और अपने प्रण को पूरा करने के लिए हनुमान जी भी विवाह सूत्र में बंधकर शिक्षा ग्रहण करने को तैयार हो गए। लेकिन हनुमान जी के लिए दुल्हन कौन हो और कहां से वह मिलेगी इसे लेकर सभी चिंतित थे।

सूर्य देव ने अपनी परम तपस्वी और तेजस्वी पुत्री सुवर्चला को हनुमान जी के साथ शादी के लिए तैयार कर लिया। इसके बाद हनुमान जी ने अपनी शिक्षा पूर्ण की और सुवर्चला सदा के लिए अपनी तपस्या में रत हो गई।

इस तरह हनुमान जी भले ही शादी के बंधन में बंध गए हो लेकिन शारीरिक रूप से वे आज भी एक ब्रह्मचारी ही हैं।

पराशर संहिता में तो लिखा गया है कि खुद सूर्यदेव ने इस शादी पर यह कहा कि – यह शादी ब्रह्मांड के कल्याण के लिए ही हुई है और इससे हनुमान जी का ब्रह्मचर्य भी प्रभावित नहीं हुआ।

श्री पवन मेहरोत्रा आगरा के निवासी हैं और एक कुशल वास्तु व अंकशास्त्र विशेषज्ञ हैं।

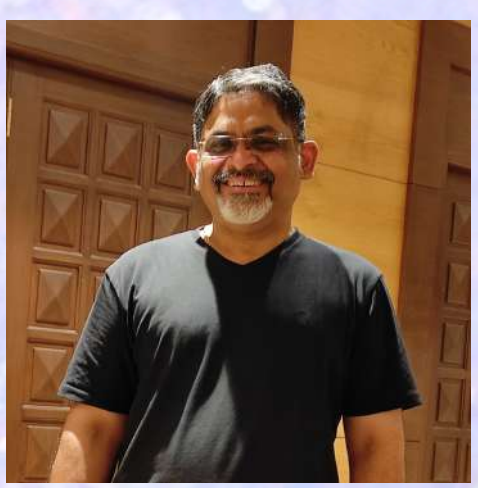

महाभारत

लेखिका - श्रीमती राशि अरोड़ा, आगरा

शास्त्र कहते हैं कि अठारह दिनों के महाभारत युद्ध में उस समय की पुरुष जनसंख्या का 80% सफाया हो गया था। युद्ध के अंत मे संजय कुरुक्षेत्र के उस स्थान पर गए जहां संसार का सबसे महानतम युद्ध हुआ था।

उसने इधर-उधर देखा और सोचने लगा कि क्या वास्तव में यहीं युद्ध हुआ था? यदि यहां युद्ध हुआ था तो जहां वो खड़ा है, वहां की जमीन रक्त से सराबोर होनी चाहिए। क्या वो आज उसी जगह पर खड़ा है जहां महान पांडव और कृष्ण खड़े थे?

तभी एक वृद्ध व्यक्ति ने वहां आकर धीमे और शांत स्वर में कहा, "आप उस बारे में सच्चाई कभी नहीं जान पाएंगे!"

संजय ने धूल के बड़े से गुबार के बीच दिखाई देने वाले भगवा वस्त्रधारी एक वृद्ध व्यक्ति को देखने के लिए उस ओर सिर को घुमाया।

"मुझे पता है कि आप कुरुक्षेत्र युद्ध के बारे में पता लगाने के लिए यहां हैं, लेकिन आप उस युद्ध के बारे में तब तक नहीं जान सकते, जब तक आप ये नहीं जान लेते हैं कि असली युद्ध है क्या?" बूढ़े आदमी ने रहस्यमय ढंग से कहा।

"तुम महाभारत का क्या अर्थ जानते हो?" तब संजय ने उस रहस्यमय व्यक्ति से पूछा।

वह कहने लगा, "महाभारत एक महाकाव्य के साथ साथ एक वास्तविकता है, लेकिन निश्चित रूप से एक दर्शन भी है।"

वृद्ध व्यक्ति संजय को और अधिक सवालों के चक्कर में फसा कर मुस्कुरा रहा था।

"क्या आप मुझे बता सकते हैं कि दर्शन क्या है?" संजय ने निवेदन किया।

अवश्य जानता हूं, बूढ़े आदमी ने कहना शुरू किया। पांडव कुछ और नहीं, बल्कि आपकी पाँच इंद्रियाँ हैं - दृष्टि, गंध, स्वाद, स्पर्श और श्रवण - और क्या आप जानते हैं कि कौरव क्या हैं? उसने अपनी आँखें संकीर्ण करते हुए पूछा।

कौरव ऐसे सौ तरह के विकार हैं, जो आपकी इंद्रियों पर प्रतिदिन हमला करते हैं लेकिन आप उनसे लड़ सकते हैं और जीत भी सकते है। पर क्या आप जानते हैं कैसे?

संजय ने फिर से न में सर हिला दिया।

"जब कृष्ण आपके रथ की सवारी करते हैं!" यह कह वह वृद्ध व्यक्ति बड़े प्यार से मुस्कुराया और संजय अंतर्दृष्टि खुलने पर जो नवीन रत्न प्राप्त हुआ उस पर विचार करने लगा।

"कृष्ण आपकी आंतरिक आवाज, आपकी आत्मा, आपका मार्गदर्शक प्रकाश हैं और यदि आप अपने जीवन को उनके हाथों में सौप देते हैं तो आपको फिर चिंता करने की कोई आवश्कता नही है।" वृद्ध आदमी ने कहा।

संजय अब तक लगभग चेतन अवस्था में पहुंच गया था, लेकिन जल्दी से एक और सवाल लेकर आया।

फिर कौरवों के लिए द्रोणाचार्य और भीष्म क्यों लड़ रहे हैं?

भीष्म हमारे अहंकार का प्रतीक हैं, अश्वत्थामा हमारी वासनाएं, इच्छाएं हैं, जो कि जल्दी नहीं मरतीं। दुर्योधन हमारी सांसारिक वासनाओं, इच्छाओं का प्रतीक है। द्रोणाचार्य हमारे संस्कार हैं। जयद्रथ हमारे शरीर के प्रति राग का प्रतीक है कि 'मैं ये देह हूं' का भाव। द्रुपद वैराग्य का प्रतीक हैं। अर्जुन मेरी आत्मा हैं, मैं ही अर्जुन हूं और स्वनियंत्रित भी हूं। कृष्ण हमारे परमात्मा हैं। पाँच पांडव पाँच नीचे वाले चक्र भी हैं, मूलाधार से विशुद्ध चक्र तक। द्रोपदी कुंडलिनी शक्ति है, वह जागृत शक्ति है, जिसके ५ पति ५ चक्र हैं। ओम शब्द ही कृष्ण का पांचजन्य शंखनाद है, जो मुझ और आप आत्मा को ढ़ाढ़स बंधाता है कि चिंता मत कर मैं तेरे साथ हूं, अपनी बुराइयों पर विजय पा, अपने निम्न विचारों, निम्न इच्छाओं, सांसारिक इच्छाओं, अपने आंतरिक शत्रुओं यानि कौरवों से लड़ाई कर अर्थात अपनी मेटेरियलिस्टिक वासनाओं को त्याग कर और चैतन्य पाठ पर आरूढ़ हो जा, विकार रूपी कौरव अधर्मी एवं दुष्ट प्रकृति के हैं।

श्री कृष्ण का साथ होते ही ७२००० नाड़ियों में भगवान की चैतन्य शक्ति भर जाती है, और हमें पता चल जाता है कि मैं चैतन्यता, आत्मा, जागृति हूँ, मैं अन्न से बना शरीर नहीं हूँ, इसलिए उठो जागो और अपने आपको, अपनी आत्मा को, अपने स्वयं सच को

जानो, भगवान को पाओ, यही भगवद प्राप्ति या आत्म साक्षात्कार है, यही इस मानव जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य है।

ये शरीर ही धर्म क्षेत्र, कुरुक्षेत्र है। धृतराष्ट्र अज्ञान से अंधा हुआ मन है। अर्जुन आप हो, संजय आपके आध्यात्मिक गुरु हैं।

वृद्ध आदमी ने दुःखी भाव के साथ सिर हिलाया और कहा, "जैसे-जैसे आप बड़े होते हैं, अपने बड़ों के प्रति आपकी धारणा बदल जाती है। जिन बुजुर्गों के बारे में आपने सोचा था कि आपके बढ़ते वर्षों में वे संपूर्ण थे, अब आपको लगता है वे सभी परिपूर्ण नहीं हैं। उनमें दोष हैं और एक दिन आपको यह तय करना होगा कि उनका व्यवहार आपके लिए अच्छा या बुरा है। तब आपको यह भी अहसास हो सकता है कि आपको अपनी भलाई के लिए उनका विरोध करना या लड़ना भी पड़ सकता है। यह बड़ा होने का सबसे कठिन हिस्सा है और यही वजह है कि गीता महत्वपूर्ण है।"

संजय धरती पर बैठ गया, इसलिए नहीं कि वह थका हुआ था, थक गया था, बल्कि इसलिए कि वह जो समझ लेकर यहां आया था, वो एक-एक कर धराशाई हो रही थी। लेकिन फिर भी उसने लगभग फुसफुसाते हुए एक और प्रश्न पूछा, *तब कर्ण के बारे में आपका क्या कहना है?*

"आह!" वृद्ध ने कहा। आपने अंत के लिए सबसे अच्छा प्रश्न बचाकर रखा हुआ है।

"कर्ण आपकी इंद्रियों का भाई है। वह इच्छा है। वह सांसारिक सुख के प्रति आपके राग का प्रतीक है। वह आप का ही एक हिस्सा है, लेकिन वह अपने प्रति अन्याय महसूस करता है और आपके विरोधी विकारों के साथ खड़ा दिखता है और हर समय विकारों के विचारों के साथ खड़े रहने के कोई न कोई कारण और बहाना बनाता रहता है।"

"क्या आपकी इच्छा; आपको विकारों के वशीभूत होकर उनमें बह जाने या अपनाने के लिए प्रेरित नहीं करती रहती है?" वृद्ध ने संजय से पूछा।

संजय ने स्वीकारोक्ति में सिर हिलाया और भूमि की तरफ सिर करके सारी विचार श्रृंखलाओं को क्रमबद्ध कर मस्तिष्क में बैठाने का प्रयास करने लगा, और जब उसने अपने सिर को ऊपर उठाया, वह वृद्ध व्यक्ति धूल के गुबारों के मध्य कहीं विलीन हो चुका था। लेकिन जाने से पहले वह जीवन की वो दिशा एवं दर्शन दे गया था, जिसे आत्मसात करने के अतिरिक्त संजय के सामने अब कोई अन्य मार्ग नहीं बचा था ।

Rashi Arora resides in Agra and is working for underprivileged children and girls. She is a spiritual thinker and motivator.

माँ

लेखिका - श्रीमती सीमा मेहरा, आगरा

माँ सृजन है - माँ है शक्ति -

माँ शिवा है माँ है भक्ति

माँ दुआ है माँ दया है - साधना -आराधना माँ।। माँ...

माँ है साधन - माँ सुरक्षा -

क्षमा है माँ ही माँ है क्षमता -

संजीवनी शक्ति है माँ और काल का भी काल है माँ।। माँ.....

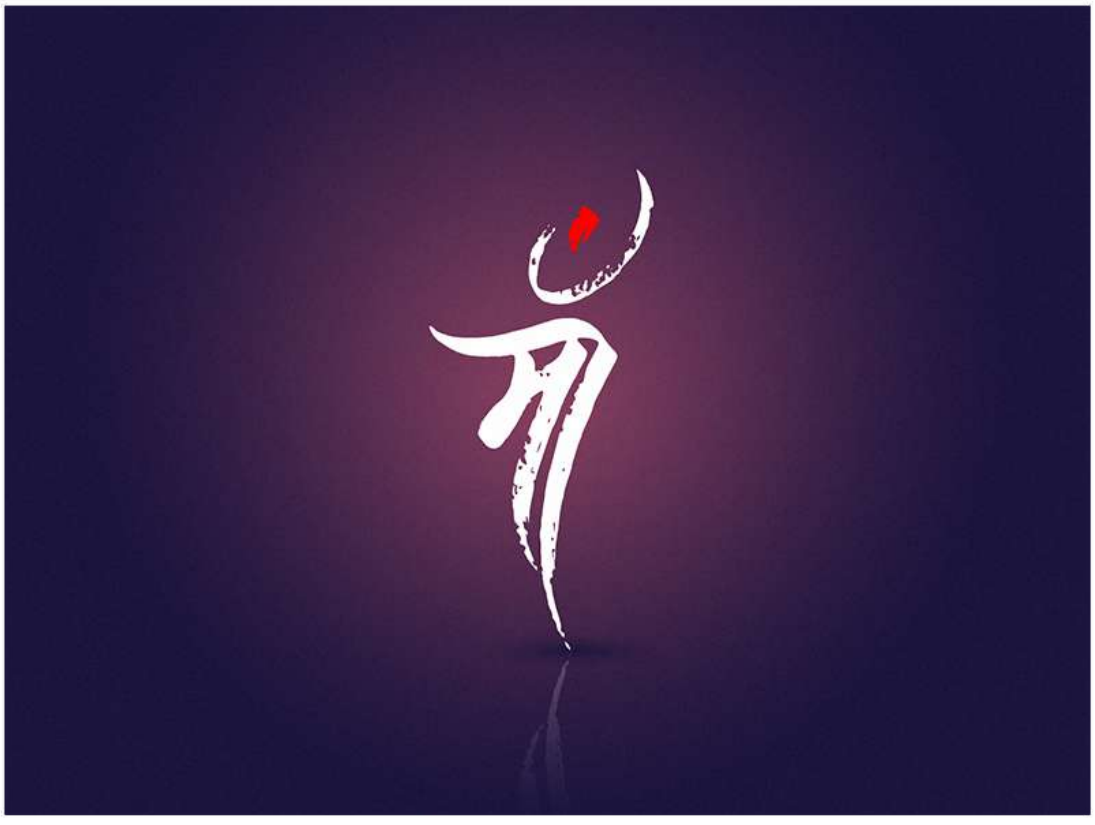

माँ है आशा - माँ है अमृत

माँ सरलता माँ संरक्षक

अनंत गाथा है गुणों की, गर्व गौरव गान है माँ।। माँ.....

माँ है सृष्टि, सुखों की वृष्टि -

सब पर है माँ की कृपा-दृष्टि कृपा-दृष्टि

माँ है रस की धार निर्मल - निश्चल - निस्वार्थ प्यार है माँ...

माँ ही तप है माँ तपस्या-

माँ का आँचल है सुरक्षा,

माँ की भक्ति मुक्तिदायनी, संजीवनी वरदान है माँ ।। माँ...!

सीमा मेहरा एक कवियित्री और गायिका हैं यह एक समाज सेविका भी हैं जो निरन्तर श्रीहीन बच्चों की शिक्षा के लिए सदा प्रयासरत रहती हैं साथ ही यह एक बेहतरीन शेफ भी हैं।

वाणी प्रहार

लेखक - श्री मनोज पुरी, ग्रेटर नोएडा

वाणी जब शब्दों से अपने, प्रहार किसी पर करती है ,

बिन गोली, हथियार बिना, वो दिल को छलनी करती है ।

मस्तिष्क की थोड़ी नासमझी से, ह्रदय आघातित होता है ,

दिल से छलनी होने वाला, खून के आँसू रोता है ।।

दूरगामी परिणाम वो इसके, रिश्तों में तब पाता है ,

इक दूजे से आँख मिलाने, में भी वो घबराता है ।

इसी लिए तो कहते हैं, कि वक्त बुरा जब आता है ,

कुछ न कुछ नासमझी इंसा, आखिर कर ही जाता है ।।

कब्र खोद कर रिश्तों की, सौहार्द-प्रेम दफनाता है ,

आवाज वो लेकिन मन की अपने, कभी नहीं सुन पाता है ।

शब्दों से घायल होने वाला, समझ नहीं कुछ पाता है ,

मान के बस अनहोनी घटना, मन मसोस रह जाता है ।।

वाणी का प्रहार बुरा है, ये तो इक हथियार बुरा है ,

इससे होती घोर निराशा, मिटती पुर्नमिलन की आशा ।

एक बार तरकश से निकला, तीर न वापस आता है ,

इसी लिए तो घातक सबसे, वाणी प्रहार कहलाता है ।।

श्री मनोज पुरी 'केन्द्रीय राजस्व नियन्त्रण सेवा ' के सेवा निवृत्त राजपत्रित अधिकारी हैं जिनकी कविताओं का संग्रह- 'अंजुमन' काव्य जगत में चर्चित रहा है तथा वे कई स्थानों पर पुरस्कृत व सम्मानित हुए हैं। आप पिछले ५० साल से योग से जुड़े हैं व ३५ वर्षो से अधिक योग प्रशिक्षक के रूप में समाज सेवा कर रहें हैं।

ज़िन्दगी की गहराई को पढ़ कर पाया

लेखिका - श्रीमती प्रेरणा मेहरोत्रा गुप्ता, गाज़ियाबाद

प्रस्तुत पंक्तियों में कवयित्री समाज को यह समझाने की कोशिश कर रही है कि हर एक इंसान ही अपनी कहानी का हीरो होता है, सब अपनी-अपनी भूमिका अपने जीवन में निभा रहें हैं , जिसकी कहानी सबसे अच्छी होती है वह लाखों के लिए एक प्रेरणा बन जाती है। अगर हर इंसान चाहे तो अपने जीवन से वह लाखों को बहुत कुछ सिखा सकता है लेकिन उसके लिए उसे मालूम करना होगा कि वह क्या अच्छी तरह से कर सकता है जो दूसरों से अलग हो और जिससे लाखों लोग उसकी कहानी से सीखे।

इन पंक्तियों में कुछ गुप्त राज़ हैं, पढ़ने वाले के मन मे लगन होगी तो उसे ये ज़रूर समझ आयेंगी, जिसे अपना कर वह जीवन में बहुत कुछ कर पाएगा और उसकी कहानी भी मशहूर होगी। ये बात विचारणीय है कि मेहनत तो सब करते हैं, फिर बड़े मुकाम पर सफलता सिर्फ कुछ ही को क्यों मिलती है?

अब आप इन पंक्तियों को ध्यान से पढ़ें।

ज़िन्दगी की गहराई को पढ़ कर पाया,

हर एक का जीवन, एक अनोखी कहानी है।

जिसे इस दुनिया में रहकर,

सबको अच्छे कर्मो से सजानी है।

ज़िन्दगी की गहराई को पढ़ कर पाया,

अच्छी किताबें और अच्छी संगत,

हमे ईश्वर द्वारा, लिए जाने वाली,

परीक्षा के लिए तैयार करती हैं।

ज़िन्दगी की गहराई को पढ़ कर पाया,

अच्छे को और अच्छा बनाने के लिए,

ईश्वर हर कदम पर उसकी परीक्षा लेता है।

ज़िन्दगी की गहराई को पढ़ कर पाया,

बुरा न मान, किसी की निंदा का ,

क्योंकि वो भी ईश्वर की परीक्षा का ही एक हिस्सा है।

ज़िन्दगी की गहराई को पढ़ कर पाया,

अपने में मदमस्त रहने वाला व्यक्ति,

जीवन में बहुत कुछ, अपने दम पर पा सकता है।

ज़िन्दगी की गहराई को पढ़ कर पाया,

किसी को समझना है तो,

उसके कपड़े या बोली से कही ज़्यादा,

उसकी भावनाओं पर ध्यान दो।

ज़िन्दगी की गहराई को पढ़ कर पाया,

ईश्वर और सफलता की प्राप्ति,

तीर्थ स्थानों में नहीं बल्कि,

अपने भीतर उस शक्ति को खोज कर होगी।

ज़िन्दगी की गहराई को पढ़ कर पाया,

विचित्र है ये दुनिया,

अंतरमन को नज़र अंदाज़ कर,

बाहरी दिखावें को मानती है।

ज़िन्दगी की गहराई को पढ़ कर पाया,

इस दुनिया में, तुम्हारे से ज़्यादा अच्छा,

तुम्हें कोई नहीं समझ सकता,

क्योंकि दूसरा तुम्हारी पीड़ा सिर्फ सुन सकता है,

महसूस तो सिर्फ तुम्हें ही होता है।

प्रेरणा मेहरोत्रा गुप्ता दिल से एक कवयित्री हैं, जो केवल मानवता में विश्वास करती है किसी एक धर्म में नहीं। पृथ्वी पर प्रत्येक जीव का सम्मान करना उन्होंने अपने गुरु डॉ. दाईसाकू इकेदा से सीखा है। वह अपनी कविताओं के माध्यम से समाज में शांति और खुशी फैलाना चाहती हैं।

IKMG Patrika

INVITES OUR OWN WRITERS

February edition

Stories | Poems | Recipes | Artwork

Pls. Send your entries latest by January 15, 2022

Entries should be sent in word format only along with your brief introduction and a pic

Keep writing; keep shining; keep smiling

patrika@ikmgglobal.org;
9958363661

नियति

लेखक - श्री सुशील मेहरोत्रा, मुरादाबाद

"आज हम सभी के लिए बहुत हर्ष की बात है कि श्री मन मोहन शर्मा जी पद्दोनति उपरान्त अधिकारी पद पर स्थानांतरित होकर जा रहें हैं । श्री शर्मा जी जैसे कर्मठ , ईमानदार व्यक्तित्व को यह पद्दोनति जल्दी मिल जाती परन्तु उनकी अनिच्छा से ये विलम्ब हो गया।" "इतने वर्षों तक साथ रहने के कारण उनके जाने का हम सभी को दुःख है। परन्तु उनके सुखद भविष्य की कामना हम सभी करते हैं ।" शाखा प्रबंधक के इन शब्दों के साथ सभी लोगों ने जोर शोर से तालियां बजायीं । सभी लोग उन्हें अपनी शुभकामनाएं दे रहे थे।

श्री मन मोहन शर्मा जी जोधपुर में सरकारी बैंक की विभिन्न शाखाओं में बतौर लिपिक कार्यरत थे। यहाँ पर वो लगभग १५ वर्षों से थे। परन्तु अब सहकर्मियों और मित्रों के जोर देने पर पदोन्नति लेकर जोधपुर के करीब एक छोटे से कस्बे बीसलपुर में अधिकारी के रूप में स्थानांतरित होकर जा रहे थे। उनके परिवार में उनकी पत्नी सोमवती व एक पुत्र अजीत था। उसकी आयु लगभग १० वर्ष थी। जोधपुर में वे किराए के मकान में ही रहते थे इसलिए बीसलपुर वह परिवार सहित ही जा रहे थे।अपने दोस्तों और सहकर्मियों से बिछुड़ते हुए उनको भी काफी दुःख था परन्तु कुछ पाने के लिए कुछ खोना भी पड़ता है ।

अतः नयी ज़िम्मेदारियों और नए स्थान पर जाने का उत्साह भी था । वह सदा से ही अपने कार्य के प्रति समर्पित थे। बैंक से विदा होकर जब वो घर पहुंचे तो पत्नी और बच्चे से मिलकर उनकी समस्त उदासीनता समाप्त हो गयी। बैंक की सारी बातें पत्नी से बता कर वह बीसलपुर जाने की तैयारियों की चर्चा करने लगे । उन्हें एक सप्ताह में नयी शाखा में पहुंचना था। इसी समय में उन्हें बच्चे का स्कूल में एडमिशन व घर की भी व्यवस्था करनी थी। उन्होंने अगले दिन बीसलपुर शाखा में अपने मित्र से किराये के लिए मकान व बच्चे के स्कूल में दाखिले के लिए बात करने का निर्णय किया । बालक अजीत भी क्योंकि पहली बार जोधपुर से बाहर जा रहा था काफी उत्साहित था।

अगले दिन शर्मा जी ने जब अपने मित्र से बात की तो उसने यह कहकर उन्हें निश्चिंत कर दिया कि उनके यहाँ आने से पहले ही वो सारी व्यवस्था कर देगा। तीन दिन उपरान्त शर्मा जी अपने परिवार और सामान के साथ बीसलपुर आ गए। उनके मित्र ने उनके लिए मकान की व्यवस्था कर रखी थी। दोनों दोस्त इतने वर्षों के पश्चात एक दूसरे से मिलकर बहुत प्रसन्न हुए। बीसलपुर एक छोटा सा क़स्बा था जो जोधपुर से लगभग ५० किलोमीटर दूर था। कसबे की जनसंख्या पांच हज़ार के करीब थी। गांव में मुख्यतः ब्राह्मण, ठाकुर, राजपूत रहते थे। गांव में एक सरकारी व एक निजी हाई स्कूल था जो इंटरमीडिएट तक था। बाजार भी ठीक था परन्तु प्रमुख व्यवसाय कृषि ही था। वहां के एक कास्तकार श्री रायसिंघ राजपूत के यहाँ किराये के घर की व्यवस्था हुई थी। श्री राजपूत का मकान काफी बड़ा था और उसी के एक हिस्से में शर्मा जी को किराये पर दिया गया था। शर्मा जी मकान को देखकर काफी खुश थे ।इस छोटे से कसबे में इतना सुन्दर मकान मिलना ख़ुशी की बात थी। श्री राजपूत के परिवार में उनकी पत्नी भाँवरि देवी व पुत्री मीरा राजपूत थी। मीरा की आयु लगभत ८ वर्ष थी।

मनमोहन शर्मा जी अपने परिवार व सामान के साथ मकान में आ गए। क्योंकि यह लोग यहाँ नए थे, राजपूत जी व उनकी पत्नी उनसे मिलने आये और हर प्रकार के सहयोग का आश्वासन दिया। उनके व्यवहार से शर्मा जी व उनकी पत्नी बहुत खुश थे। छोटी मीरा भी अजीत को देखकर माँ के पीछे शर्मा कर खड़ी मुस्कुरा रही थी। दोनों बच्चे हमउम्र साथी पाकर मन ही मन बहुत खुश थे। अजीत का दाखिला भी उसी स्कूल में हो गया जिसमे मीरा जाती थी। धीरे धीरे सब सामान्य हो गया। शर्माजी ने बैंक जाना शुरू कर दिया था । अजीत भी मीरा के साथ रोज़ स्कूल जाने लगा। दिन में काम से फुर्सत पाकर सोमवती मीरा की माँ भाँवरि देवी के पास चली जाती थी। शर्मा जी भी बैंक से आकर शाम की चाय अक्सर राजपूत जी के साथ ही पीते थे। समय के साथ दोनों परिवारों में बहुत प्रगाढ़ता हो गयी। अजीत और मीरा भी हरदम साथ साथ ही रहते। उन्हें खेलते, साथ घूमते देखकर और बीच बीच में झगड़ा करते देखकर दोनों परिवार बहुत प्रसन्न होते थे। अजीत थोड़ा शैतान प्रवृत्ति का था उसका पढाई में भी मन कम ही लगता था । मीरा को पढाई में बहुत रुचि थी । वह अपनी पढाई भी अजीत के साथ ही करती थी । अजीत थोड़ी देर के लिए भी इधर उधर होता तो मीरा पूरे घर में परेशान होकर उसे ढूंढ़ती रहती। अजीत उसे परेशान करने के लिए छिप जाता था। एक बार खेलते समय कांच की बोतल गिर गयी और फर्श पर कांच के टुकड़े बिखर गए । अजीत का पैर कांच पर पड़ गया और पैर कट गया जिससे काफी खून बहने लगा । यह देखकर मीरा

जोर जोर से रोने लगी। डॉक्टर के पास अजीत को ले जाकर पट्टी करवा दी गयी और वह घर वापस आ गया। मीरा उसको देखकर बहुत रो रही थी। सबने उसको बहुत समझाया मगर वह अजीत के पास से हटने को तैयार नहीं थी। बहुत समझाने के बाद वह वहां से गयी। उसकी परेशानी और अजीत से जबरदस्त लगाव देखकर दोनों परिवार परेशान थे। समय भी जैसे पंख लगाकर उड़ चला।

धीरे धीरे तीन वर्ष बीत गए। दोनों परिवारों में इतना मेल-मिलाप हो गया था कि लगता ही नहीं था उनका मालिक मकान और किरायेदार का रिश्ता है। दोनों बच्चे बड़े हो रहे थे और समझदार भी और उनका आपसी प्रेम भी समय के साथ साथ बढ़ता ही गया। मीरा और अजीत दोनों को एक दूसरे से दूरी बहुत अखरती थी। उनके इस निश्छल प्रेम से सभी अभिभूत थे। फिर एक दिन शर्मा जी ने बैंक से आकर वह खबर सुनाई कि सब सन्न रह गए।

"मेरा यहाँ से स्थानांतरण हो गया है। अलवर ज़िले में एक नयी शाखा खुल रही है और मुझे वहां का प्रबंधक बनाया गया है,"

"अगले एक सप्ताह में ही वहां पहुँचाना है।"

सुनते ही सबको सदमा सा लगा।

"यह क्या कह रहे हैं शर्मा जी। मन यह मान ही नहीं रहा है कि आप यहाँ से चले जायेंगे " राजपूत जी ने कहा ।

"पापा क्या हम सबको ही जाना होगा। मीरा भी हमारे साथ जाएगी न।" अजीत बोला।

" बेटा, मीरा कैसे जा सकती है।। उसे तो अपने मम्मी पापा के पास ही रहना होगा ।" मीरा भी यह जानकार की अजीत यहाँ से चला जायेगा माँ से चिपटकर रोने लगी। वहां का वातावरण बहुत बोझिल हो गया था । शर्मा जी भी बच्चों को इस प्रकार रोते देखकर परेशान हो गए थे।

अगले दिन रविवार था। हर रविवार दोनों परिवारों के सदस्य साथ साथ नाश्ता करते थे। उस दिन नाश्ते के समय कोई उत्साह नहीं था सब लोग चुप थे। नाश्ते के मध्य ही राजपूत जी ने शर्मा जी से कहा " भाई साहब मेरे मन में एक बात आ रही है । मैंने इस पर काफी विचार भी किया है। अगर आप अन्यथा न लें तो मैं आपसे कुछ कहना चाहता हूँ।"

"भाई साहब, यह आप कैसी बात कर रहे हैं। आप की बात को अन्यथा लेने का कोई प्रश्न ही नहीं होता है। आप निस्संकोच कहें ।"शर्मा जी ने कहा

" दोनों बच्चे एक दुसरे को बहुत चाहते हैं। हमारे परिवारों में भी बहुत सामंजस्य है । क्यों न हम इसे रिश्तों की डोर से और मजबूत कर दें।" राजपूत जी ने थोड़ा झिझकते हुए कहा । " मैं आपकी बात पूरी तरह नहीं समझा भाई साहब "

"क्यों न हम दोनों का विवाह कर दें। राजपूत जी ने थोड़ा स्पष्ट कहा।

"भाईसाहब यह आप क्या कह रहे हैं। दोनों अभी बच्चे हैं। बच्चों की शादी कोई मन बहलाने का साधन तो नहीं है।" " वैसे भी बच्चे बड़े होकर अगर साथ नहीं रहना चाहेंगे तो क्या होगा। नहीं नहीं यह बिलकुल भी उचित नहीं लगता है " शर्मा जी ने कहा

"भाई साहब हम उनकी अभी शादी नहीं करेंगे। बस दोनों परिवारों में रिश्ते की गाँठ लगा देंगे। बड़े होने पर बच्चों को भी बतला देंगे"। राजपूत जी ने कहा । "वैसे भी हमारे यहाँ रिश्ते ऐसे ही होते हैं और सफल भी होते हैं।"

"मगर बाल विवाह तो कानूनी अपराध है " शर्मा जी थोड़े चिंतित होकर बोले।

"मैं भी जानता हूँ। मगर हम विवाह थोड़े ही कर रहे हैं। बस विवाह करने मात्र का संकल्प कर रहे हैं। शर्मा जी को भी इसमें कुछ गलत नहीं लगा। पंडित जी को बुलाकर कुछ पूजा इत्यादि करा कर उन दोनों का विवाह उनके बालिग़ होने पर करने का संकल्प किया गया।

एक सप्ताह पश्चात शर्मा जी सपरिवार वहां से नए स्थान में आ गए। नयी शाखा खुली थी इसलिए बैंक में व्यापार बढ़ाने का दबाब था । इसलिए शर्मा जी काम में व्यस्त रहते थे और ज्यादा से ज्यादा लोगों से मिलकर बैंक में व्यापार बढ़ाने की चेष्टा में ही रहते। अजीत ने दूसरे स्कूल में दाखिला ले लिया था । वहां उसका मीरा के बिना मन नहीं लगता था। शुरू में मीरा को भी अजीत का जाना बहुत अखरा, मगर धीरे धीरे वो संभल गयी। उसका ज्यादा समय घर में और पढाई में ही व्यतीत होता था । कुछ दिन शुरू में दोनों परिवारों में फ़ोन पर बातचीत होती थी परन्तु फिर अंतराल बढ़ता ही गया। अब कम ही बात होती थी। अजीत अब हाई स्कूल में आ गया था। उसकी पढाई को लेकर शर्मा जी चिंतित रहते थे क्योंकि अजीत पढाई में कोई रूचि नहीं ले रहा था। जैसे तैसे उसने हाई स्कूल की परीक्षा द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण की। यह खबर जब उसने मीरा को सुनाई तो वह खुश नहीं हुई। मीरा हरदम अपनी कक्षा में प्रथम आती थी। लगभग साढ़े तीन वर्ष के उपरान्त शर्मा जी पदोन्नति पाकर जयपुर में एक बड़ी शाखा में प्रबंधक बनाकर भेज दिए गए। पदोन्नति पाकर व अच्छे शहर में नियुक्ति पाकर वह काफी खुश थे। यह खबर उन्होंने राजपूत जी को भी बताई थी। यहाँ अजीत ने इंटरमीडिएट में दाखिला ले लिया था। बड़ा शहर, पिताजी की व्यस्तता और घर से स्कूल की दूरी से अजीत को ज्यादा आज़ादी मिल गयी ।

वह दोस्तों के साथ समय ज्यादा बिताताा और पढाई में ध्यान नहीं देता था। इस कारण वह बारहवीं की परीक्षा में फेल हो गया। शर्मा जी और उनकी पत्नी सोमवती को बहुत गहरा सदमा लगा। शर्मा जी अजीत के भविष्य को लेकर बहुत परेशान रहने लगे थे। माँ सोमवती को यह आशा थी कि अजीत पढ़ लिख कर जब अच्छी नौकरी करेगा तो वह मीरा को बहू बनाकर अपने घर ले आएंगी। अजीत के परीक्षा में फेल होने के बारे में जब मीरा और राजपूत जी के परिवार को पता चला तो उन्होंने कोई प्रतिक्रिया नहीं की। मीरा ने हाई स्कूल की परीक्षा बहुत अच्छे अंकों के साथ प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। आगे की पढाई के लिए निजी स्कूल जो अब इंटरमीडिएट तक हो गया था में मीरा ने दाखिला ले लिया। पढाई में अत्याधिक रुचि के कारण सभी अध्यापक उससे बहुत खुश थे। मीरा ने बारहवीं की परीक्षा न केवल प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की वरन जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया। गांव के सभी लोग, स्कूल के अध्यापक, माता पिता सभी अत्याधिक प्रसन्न थे। उसकी वजह से उनके स्कूल को भी ख्याति मिली थी।

मीरा आगे की पढाई कर सरकारी अफसर बनना चाहती थी। गांव में आगे पढाई की कोई व्यवस्था नहीं थी अतः आगे पढ़ने के लिए शहर जाना पड़ता परन्तु अकेली लड़की को राजपूत जी शहर नहीं भेजना चाहते थे। परन्तु मीरा की जिद और उसकी पढाई के प्रति लगन देखकर वह राज़ी हो गए। आगे की पढाई के लिए मीरा ने जोधपुर के सबसे अच्छे महिला महाविद्यालय में दाखिला ले लिया। उसने विद्यालय के ही महिला छात्रावास में अपने रहने की भी व्यवस्था कर ली। अजीत के बारहवीं में फेल होने के पश्चात भी उसका पढाई में बिल्कुल मन नहीं लगता था। यह देखकर माँ सोमवती देवी चिंता और दुःख से बीमार रहने लगी। अजीत दोस्तों के साथ ज्यादातर बाहर घूमता रहता और शर्मा जी बैंक के कार्य में व्यस्त रहते थे। अतः घर पर माँ को सहारा देने वाला कोई नहीं होता था। इलाज़ के बाद भी उनकी तबियत ठीक नहीं हो पा रही थी। शर्मा जी पत्नी के स्वास्थ्य और अजीत के भविष्य को लेकर बहुत चिंतित रहने लगे थे। अब राजपूत जी से भी बात बहुत कम होती थी। शर्मा जी ने एक संस्था को काफी बड़ा ऋण मंजूर करवाया था जिसमे जमानत के रूप में करोड़ों मूल्य के सम्पति के दस्तावेज़ बैंक में रखे गए थे। ऋण का भुगतान न होने पर जांच की गयी तो पता चला कि समस्त अभिलेख फ़र्ज़ी हैं। इससे बैंक को करोड़ों की हानि हुई। विभागीय जांच में शर्मा जी की लिप्तता और लापरवाही सिद्ध हुई।

उनको नौकरी से निलंबित कर दिया गया। परिवार पर यह बहुत बड़ा आघात था। सदमे और इलाज़ में कमी से सोमवती देवी की तबियत बिगड़ गयी और अंततः उनका स्वर्गवास हो गया। शर्मा जी बिल्कुल टूट गए थे। संगी साथी भी साथ छोड़ चुके थे। जीवन में चहुंओर अंधकार ही दिखाई दे रहा था। अजीत ने भी पढाई छोड़ दी थी। नौकरी और पत्नी के जाने के बाद से शर्मा जी भी सारा दिन घर में गुमसुम पड़े रहते। घर में पैसो की तंगी होने लगी थी। अजीत ज्यादा पढ़ा लिखा नहीं था अतः और कोई साधन नहीं होने की वजह से अजीत ने ऑटो रिक्शा चलाना शुरू कर दिया। यह समस्त घटनाक्रम में सूचना के बाद भी राजपूत जी या उनके परिवार के किसी सदस्य ने संपर्क तक नहीं किया।

अजीत की माँ ने उसको बताया था कि बचपन में उसका विवाह मीरा से करने का निर्णय लिया था परन्तु परिस्थितियों वश उनसे इस बारे में दुबारा कोई बात नहीं हुई। उन्होंने ने भी कभी इस बारे में नहीं कहा और अब उनसे संपर्क भी लगभग खत्म हो गया है। परिवार में इतना कुछ हो जाने के बाद अजीत भी अब जिम्मेदारी समझने लगा था। दोस्त यार सब छूट गए थे। दिन भर ऑटो चलाना और शाम को घर आकर पिताजी को देखना और भोजन आदि की व्यवस्था देखना यही उसका नित्यकर्म हो गया था। मीरा और उसके परिवार को वह लगभग भूल चुका था। मीरा पढ़कर सरकारी बैंक में अधिकारी बनना चाहती थी। मीरा ने स्नातक की पढाई प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। साथ ही बैंक अधिकारी के पद के लिए भी तैयारी करती रही। उसने प्रथम बार में ही बैंक अधिकारी के चयन की प्रतियोगिता में सफलता प्राप्त की और उसको भारतीय स्टेट बैंक में प्रोबेशनरी अफसर के रूप में नियुक्ति मिल गयी। धीरे धीरे दो वर्ष बीत चुके थे। अजीत अब सब कुछ भूलकर अपने काम में व्यस्त रहता था। मीरा और उसके परिवार की यादें भी मिट गयीं थी। मीरा भी बैंक में चयनोपरांत ६ माह की ट्रेनिंग हेतु जयपुर की मुख्य शाखा में स्थानांतरित होकर आ गयी। मीरा के बाहर रहने के कारण राजपूत जी भी गांव के घर को बेचकर और खेती बाड़ी को किराये पर देकर जोधपुर आकर बस गए। उनका शर्मा जी से संपर्क अब खत्म हो चुका था। मीरा की माँ ने जब एक बार उसको बचपन के विवाह संकल्प की बात बताई तो उसने उसको हंसी में उड़ा दिया। उसके विचार में यह सब मूर्खता पूर्ण और अनावश्यक भावना वश किया कदम

बताया। उसने कहा कि समय आने पर वह अपना विवाह सुयोग्य, शिक्षित व्यक्ति से ही करेगी। उन्होंने भी कुछ कहना उचित नहीं समझा और वैसे भी शर्मा जी से कोई संपर्क भी नहीं रहा था।

जयपुर मैं मीरा कामकाजी महिलाओं के लिए एक हॉस्टल में रहने आ गयी थी। अब ६ महीने उसे यहीं से रोज़ आना जाना था। प्रातः दफ्तर जाने के लिए जब वह बाहर आकर ऑटो का इंतज़ार कर रही थी तो उसी समय अजीत अपना ऑटो लेकर वहां आ पहुंचा। उसने उसे रोककर स्टेट बैंक की मुख्या शाखा चलने को कहा। उसे ऑटो वाले का चेहरा कुछ पहचाना सा लगा; परन्तु इसे मन का भ्रम समझ कर यह विचार हटा दिया। वैसे भी वक्त और हालातों ने और चेहरे पर बड़ी हुई दाढ़ी में अजीत बिल्कुल बदल गया था। उतरते समय मीरा ने कहा " मुझे रोज़ इसी समय दफ्तर आना है। क्या तुम हमे इसी समय रोज़ छोड़ सकते हो।"

अजीत ने कहा "जी मैडम! मैं रोज़ इसी समय आपको हॉस्टल से लेने आ जाऊंगा । "

"आप कहेंगी तो शाम वापसी में भी लेने आ जाऊंगा।”

"नहीं; शाम का अभी कुछ पता नहीं है । मैं जैसा होगा बता दूंगी ।”

"जी अच्छा" कहकर अजीत वहां से चला गया। अब रोज़ तय समय अजीत मीरा को छात्रावास से लेकर दफ्तर छोड़ देता। क्योंकि शाम वापसी का कोई निश्चित समय नहीं था अतः जब मीरा कह देती उस दिन शाम को भी ले लेता। एक दिन सवेरे आते समय उसका ऑटो रास्ते में ख़राब हो गया । इस कारण वह मीरा को हॉस्टल लेने नहीं आ सका । अगले दिन जब मीरा को लेने पहुंचा तब वह नाराज़ थी।" कल आपके इंतज़ार में मुझे दफ्तर पहुंचने में विलम्ब हो गया । अगर नहीं आना था तो पहले बताना चाहिए था।”

"सॉरी मैडम जी, कल रास्ते में आते समय ऑटो ख़राब हो गया था। इसलिए नहीं पहुँच पाया ।” मेरे पास आपका कोई मोबाइल नंबर भी नहीं था। नंबर होता तो मैं आपको जरूर बता देता।"

"ठीक है मेरा नंबर ले लो। अगर कभी किसी कारण नहीं आना हो तभी फ़ोन करना।”

मीरा ने अपना नंबर उसे दे दिया और मन में सोचने लगी की व्यर्थ ही उस पर नाराज़ हुई। उसे अजीत एक भला आदमी लगा जिसने बिना कुछ कहे ही क्षमा मांग ली ।

काफी समय तक उनमे रास्ते में कोई बात नहीं हुई। एक दिन शाम को लौटते हुए मीरा की तबियत कुछ ख़राब थी और हल्का बुखार भी था। अजीत उसके मना करने के बावजूद उसे एक अच्छे डॉक्टर के पास दिखाने के लिए ले गया। डॉक्टर को दिखाकर और बाज़ार से दवाइयां लेकर उसने मीरा को हॉस्टल छोड़ दिया।

"मैडम, आप शायद बाहर की हैं और ज्यादा यहाँ के बारे में नहीं जानती होंगी। मैं तो यही रहता हूँ। अगर किसी चीज़ की आवश्कता हो तो मुझे फ़ोन कर दीजियेगा।"

"हाँ मैं जोधपुर से आयी हूँ। आपकी मदद के लिए बहुत धन्यवाद। जरुरत पड़ने पर मैं आपको बुला लूंगी" मीरा ने कहा

कुछ दिनों में तबियत ठीक होने पर मीरा ने फिर से दफ्तर जाना शुरू कर दिया। इतने दिनों के बाद अब मीरा कभी कभी अजीत से कुछ बात कर लेती थी। धीरे धीरे ५ माह बीत गए। एक दिन अजीत ने पूछा " मैडम, अभी आपकी ट्रेनिंग और कितने दिन चलेगी"

'क्यों " मीरा ने पूछा

'कुछ नहीं बस ऐसे ही पूछा था "

"कोई बात नहीं मैं तो ऐसे ही कह रही थी। बस एक माह की ट्रेनिंगऔर है। उसके बाद जहाँ भेजेंगे वहां जाना होगा" मीरा ने कहा

"तुम यहाँ जयपुर में कब से हो और तुम्हारे परिवार में कौन कौन है" मीरा ने पूछा

"जी जयपुर में रहते वर्षों बीत गए। यहाँ मैं अपने पिताजी के साथ रहता हूँ" अजीत ने कहा

"क्यों क्या तुम्हारी अभी शादी नहीं हुई है " मीरा ने पूछा

"जी शादी तो बचपन में ही तय हो गयी थी । मगर अभी हुई नही है" अजीत ने जबाब दिया। मीरा को अब बातों में आनन्द आने लगा था। "क्यों लड़की ने मना कर दिया क्या शादी करने से? "

"मैंने अभी तक न लड़की को देखा है और न ही मिला हूँ" अजीत ने कहा । मीरा जोर से हसने लगी। बोली "अच्छा तो बाल विवाह है। अच्छा मज़ाक है। इतने वर्षों में लड़की देखी नहीं और अपने को उसका होने वाला पति मान रहे हो।"

"अरे जिसके बारे में जानते ही नहीं उससे शादी का क्या मतलब। विवाह हमेशा सोच समझ कर ही करना चाहिए। ऐसे विवाह करना एक मूर्खता ही है" मीरा थोड़ा तिलमिला कर बोली।

"आप शायद ठीक कह रही हैं मैडम । वैसे ईश्वर ने जहाँ जिसका जोड़ा बनाया उसी के साथ बनेगा" अजीत ने कहा

इसके बाद उनमे कभी इस बारे कोई बात नहीं हुई। एक माह पश्चात मीरा का स्थानांतरण बैंक की उदयपुर शाखा में हो गया।

मीरा की बातें उसके दिमाग में घूम रही थीं और उसने एक दिन बीसलपुर जाने का निर्णय किया। इस बारे में उसने अपने पिताजी को भी बतला दिया। एक दिन वह बस से बीसलपुर आ गया। वहां जाकर पता चला की राजपूत जी ने गांव का मकान बेच दिया है और वह लोग सपरिवार कहीं जोधपुर में बस गए हैं। उनका पता और फ़ोन नंबर भी किसी से नहीं मिला। गांव में खेती का कार्य उन्होंने बटाई पर दे दिया था। उसके दिमाग में मीरा की कही बातें घूम रही थी। उसने मीरा के साथ बचपन में तय हुए विवाह को एक मन बहलाने की ही क्रिया माना और अपने मस्तिष्क से विवाह की सारी बातें हटाने का प्रयास करने लगा। उदयपुर शाखा में मीरा को काम करते २ वर्ष बीत गए थे। इसी शाखा में कार्यरत एक अन्य युवा अधिकारी से मीरा के प्रेम सम्बन्ध हो गए। वह दोनों विवाह करना चाहते थे । यद्दपि राजपूत जी प्रेम विवाह से सहमत नहीं थे परन्तु

अपनी लाड़ली बेटी की जिद के आगे उन्होंने सहमति दे दी। और उनका शीघ्र विवाह भी हो गया। अपनी पसंद का और सुयोग्य पति पाकर वह बहुत प्रसन्न थी।

विवाहोपरांत दोनों ने अवकाश लेकर मनाली जाने का कार्यक्रम बनाया। अजीत ने कुछ पैसे जमा कर किस्तों पर एक कार खरीद ली जिसे वह एक टूरिस्ट एजेंसी के अंतर्गत चला रहा था। इससे उसकी आमदनी में भी बढ़ोतरी हो गयी थी। पिताजी जब उससे विवाह की बात करते तो वह टाल जाता था। वह अपने व्यापार को और बढ़ाना चाहता था और जल्दी जल्दी किस्तें अदाकर एक और गाडी खरीदना चाहता था और अपनी खुद की ट्रेवल एजेंसी चलाना चाहता था। मीरा अपने पति के साथ मनाली घूमने आ गयी।

एक सप्ताह घूमने के पश्चात वह लोग टैक्सी से दिल्ली के लिए चल दिए जहाँ से उन्हें उदयपुर जाना था। रास्ते में अचानक तेज वर्षा शुरू हो गयी जिससे सड़क पर दिखना बहुत कम हो गया। वर्षा से बचने के लिए चालक ने टैक्सी सड़क किनारे खड़ी कर दी। तेज वर्षा में ही चले आ रहे एक मिनी ट्रक ने किनारे खड़ी गाडी में जोर से टक्कर मार दी । टक्कर बहुत जोरदार थी। इस हाद्से में टैक्सी चालक व मीरा के पति की तत्काल मृत्यु हो गयी और मीरा भी गंभीर रूप से घायल हो गयी।

किसी की सूचना पर थोड़ी ही देर में पुलिस वहां पहुँच गयी और मीरा को मनाली के जिला हॉस्पिटल में भर्ती किया गया । उसके मूर्छित होने के कारण उसे अपने पति के बारे में कोई खबर नहीं थी। इस दर्दनाक हादसे की सूचना बैंक में दी गयी जिन्होंने तुरंत उसके पिता को यह खबर बताई। परिवार पर वज्रपात हो गया। सदमे के कारण कोई कुछ कह भी नहीं पा रहा था। माँ तो खबर सुनकर विक्षिप्त सी हो गयी। राजपूत जी की आँखों से भी निरंतर आंसू बहे जा रहे थे। उन्होंने अपने एक मित्र को बुलाया जिसके साथ वह तुरंत मनाली को चल दिए। पत्नी को अपने मित्र के परिवार में छोड़ दिया। वहां पहुँच कर दामाद के मृत शरीर को देखकर वह पागल से हो गए । अभी तो उन्होंने उसे जी भर के देखा भी नहीं था कि वह छोड़ कर चला गया। उनके मित्र ने उन्हें किसी प्रकार सम्हाला। मीरा की अवस्था ठीक नहीं थी। जरुरी उपचार के पश्चात डॉक्टर बेहतर इलाज के लिए उसे बड़े अस्पताल भेजना चाहते थे। मीरा को चंडीगढ़ पी जी आई ले जाया गया। ईश्वर की कृपा से और डॉक्टरों के प्रयासों से मीरा एक माह में ठीक हो गयी।

एक्सीडेंट की वजह से उसका बांया हाथ टेढ़ा हो गया था और काम नहीं कर रहा था और साथ ही चेहरे में भी कई ऑपरेशन करने पड़े थे। मीरा बिलकुल गुमसुम रहने लगी थी। उसकी शारीरिक और मानसिक स्थिति देखते हुए बैंक ने एक वर्ष के लिए उसका स्थानांतरण जोधपुर कर दिया जिससे वह परिवार की देखरेख में रह सके। शादी के कुछ ही दिनों में पति को खोने से और स्व्यं की आंशिक विकलांगता ने उसे जीवित ही मृतप्राय कर दिया था। बैंक में भी किसी से वो अनावश्यक बात नहीं करती थी। घर से बैंक और वापस घर आना ही उसकी दिनचर्या थी।

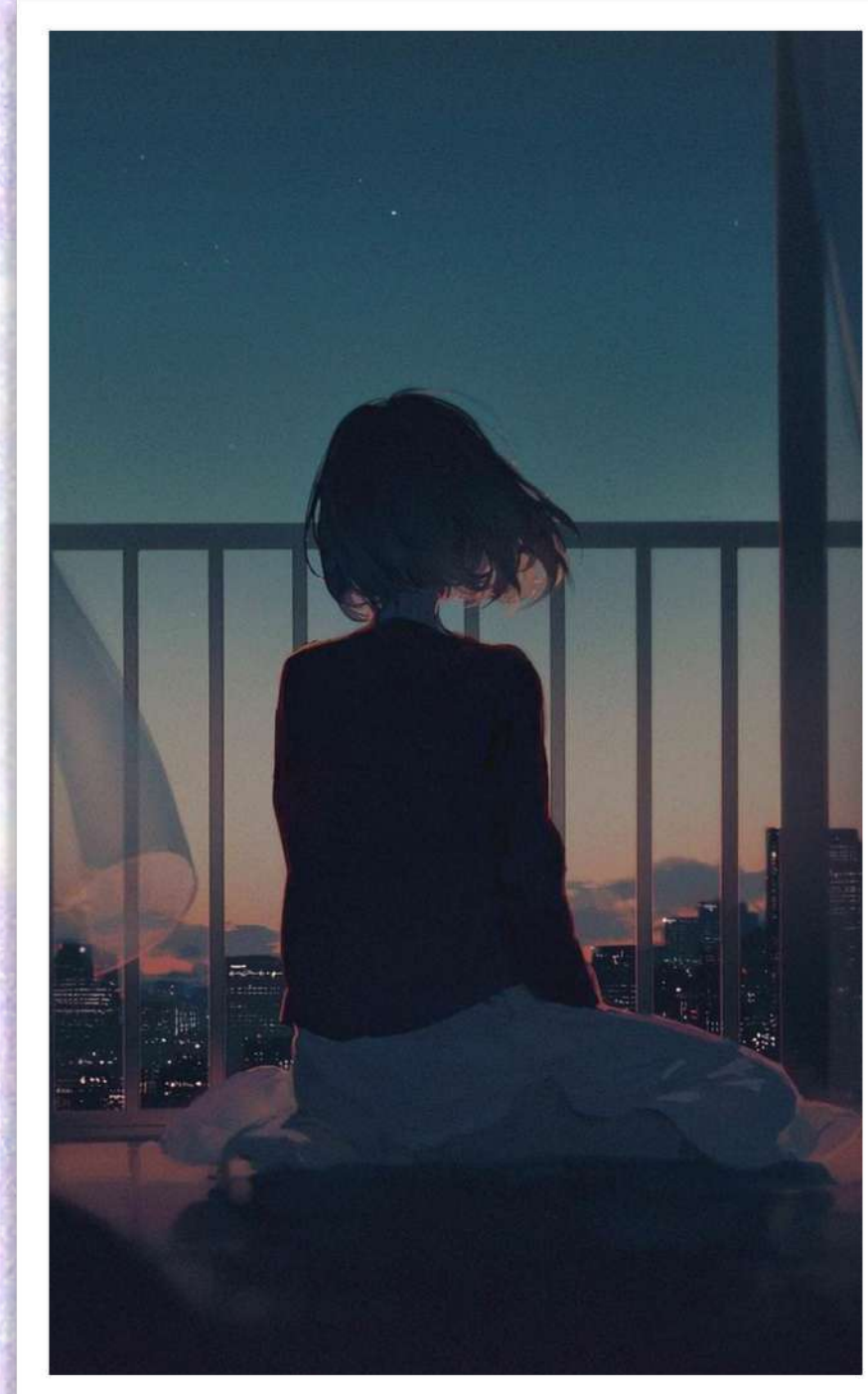

एक दिन एक टूरिस्ट को अजीत अपनी टैक्सी से जोधपुर लेकर आया। कुछ काम से वह स्टेट बैंक की जोधपुर शाखा में जहाँ मीरा काम करती थी उन सज्जन को लेकर आया। वह सज्जन अपने काम के सन्दर्भ में मैनेजर के पास चले गए। टैक्सी पार्क करके वह ठंडा पानी पीने और थोड़े समय ऐ.सी. में बैठने के उद्देश्य से शाखा के अंदर आ गया। पानी पीने के बाद वह हाल में बैठकर उनका इंतज़ार करने लगा। अचानक उसकी नज़र काम

करती हुई मीरा पर पड़ी।उसे लगा कि वह मीरा मैडम ही है। उनसे मिलने और अभिवादन के प्रयोजन से उनकी सीट पर जा पहुंचा। अजीत बोले " मैडम जी नमस्ते। मैं अजीत जो आपको जयपुर में बैंक ले जाता था "

"नमस्ते" कहकर मीरा ने नज़रे झुका लीं। मीरा के चेहरे को देखकर और उनके बाएं हाथ को स्थिर देखकर वह परेशान हो गया। मीरा को ऐसी अवस्था में देखकर उसे बिल्कुल विश्वास नहीं हो रहा था कि यह वही मैडम हैं। उसने पूछा " मैडम यह सब क्या और कैसे हो गया। आपको इस अवस्था में देखकर बहुत दुःख हो रहा है।" मीरा ने कुछ जबाब नहीं दिया बस आँखों में आंसू भर आये। अपने को थोड़ा संयत कर उसने पूछा " आप यहाँ कैसे आये हैं। कुछ काम है क्या?”

"नहीं मैडम जी आप लोगों की दुआओं से मैंने ऑटो चलाना बंद करके एक टैक्सी खरीद ली है। उसी में एक सज्जन को लेकर आये हैं। वह अभी मैनेजर साहब के पास बैठे हैं। आपको देखकर आपसे नमस्ते करने आ गया ।मगर आपकी ऐसी अवस्था देखकर बहुत दुःख हुआ है।”

"अच्छा मैडम जी नमस्ते” कहकर वह वहां से आ गया। बैंक से बाहर आकर उसने बैंक के गॉर्ड से उनके बारे में पूछा। पहले तो गॉर्ड ने पूछा कि वह क्यों जानना चाहता है तो उसने सब बता दिया। उसने कहा " ईश्वर किसी को इतना दुःख न दें और उसने समस्त बातें उसको बता दीं । उस हाद्से में मीरा मैडम ने अपने पति को खो दिया और उनका बायां हाथ भी ख़राब हो गया । ईश्वर ने बस उनकी जान बचा ली । कहकर गॉर्ड भी

दुखी हो गया। अजीत ने जब गॉर्ड से मीरा का नाम सुना तो वह चौंक गया। उसने पूछा " मैडम कहाँ की रहने वाली हैं"।

"मैडम तो कई वर्षों से यहाँ जोधपुर में ही रह रही है। पहले शायद किसी गांव में रहती थीं।"

यह सुनकर अजीत के दिमाग में उथल पुथल मच गयी। कहीं यह उसकी बचपन वाली मीरा तो नहीं। वह इसी उधेड़बुन में था की वह सज्जन जिन्हे लेकर वह आया था बाहर आ गए। वह उनको लेकर वहां से चल दिया। सड़क पर चलती गाड़ी से तेज उसका दिमाग चल रहा था जैसे उसे किसी मंज़िल की तलाश थी।

जयपुर आकर वह काम में व्यस्त हो गया मगर मीरा मैडम के बारे में जानने की उत्कंठा बनी हुई थी। राजपूत जी व उनकी पत्नी अपनी इकलौती बेटी की इस दशा से बहुत दुखी रहते थे। ऐसे समय में व्यक्ति अच्छी बुरी सभी संभावनाओं, पूर्व घटनाओं और वर्तमान हालातों को उनसे जोड़कर देखता है। भाँवरि देवी के मन में अक्सर यह बात उठती की कहीं बचपन में लिए शादी के संकल्प को पूरा न करने से वर्तमान हालत तो नहीं हुए हैं। यह बात वो मन में ही रखती थी। परन्तु आज उन्होंने यह बात राजपूत जी से कही। पहले तो उन्होंने इसे मन का भ्रम कहकर पूर्णतः नकार दिया मगर मन में कहीं यह अंदेशा घर कर गया। इतने वर्षों से शर्मा जी के परिवार से कोई संपर्क भी नहीं रहा था। शर्मा जी से दुबारा मिलकर वो अपने मन के बोझ को हल्का करना चाहते थे।

आज परिस्थितियों ने सोच और मनोदशा बिल्कुल बदल दी थी। उन्होंने जयपुर शाखा में जाकर शर्मा जी के बारे में पता लगाने का प्रयास किया । वहां कार्यरत एक पुराने कर्मचारी ने बताया की बैंक में गड़बड़ी करने के आरोप में उन्हें नौकरी से हटा दिया गया था। यदापि यह समस्त घोटाला उस कंपनी ने ही किया था मगर शर्मा जी फंस गए। उसने उन्हें उनका फ़ोन नंबर भी दिया। हिचकते हुए उन्होंने शर्मा जी को फ़ोन मिलाया। फ़ोन शर्मा जी ने ही उठाया। वह राजपूत जी की आवाज़ नहीं पहचान सके। इतने वर्षो के पश्चात शर्मा जी की आवाज़ सुनकर कुछ पल के लिए राजपूत जी भी शांत हो गए। मन को स्थिर करते हुए और माफ़ी मंगाते हुए राजपूत जी ने शर्मा जी से बात करनी शुरू कर दी। कुछ देर बात करने के बाद उन्होंने मिलने की नियत से घर का पता जानना चाहा। दोनों एक दूसरे से मिलकर अपने अपने मन का गुबार निकालना चाहते थे। अतः पता मिलते ही थोड़ी देर में राजपूत जी शर्मा जी के घर पहुँच गए।

एक लम्बे अंतराल के पश्चात मिलने पर दोनों एक दूसरे के गले लग गए और फिर शुरू हो गया गिले शिकवे, मजबूरियों, हालातों में गुजरे दिनों की समस्त सुख दुःख की बातें। शर्मा जी को मीरा के साथ हुए दर्दनाक घटनाओं का बहुत दुःख हुआ। मगर उन्होंने बचपन में तय हुए रिश्ते के बारे में कुछ नहीं पूछा। संभवतः वह अपने और राजपूत जी के स्तर को देखकर और वर्तमान हालातों में ऐसी कोई बात करने से सशंकित थे। अत इस सन्दर्भ में मौन ही रहे। राजपूत जी ने शर्मा जी से पत्नी के निधन पर शोक जताया परन्तु अजीत ने अपने आपको कैसे संभाला इस पर प्रसन्नता भी दिखाई। दुबारा मिलने की बात कहकर वह आज्ञा लेकर चले गए। दोनों ने बच्चों के विवाह की बात मन में ही रखी। घर पहुँच कर राजपूत जी ने शर्मा जी से मुलाकात का संपूर्ण विवरण अपनी पत्नी को सुनाया। अजीत के अभी तक अविवाहित होने की खबर से उन्हें बहुत संतोष हुआ परन्तु वह अभी मीरा से इस सन्दर्भ में कोई बात नहीं करना चाहती थीं। अब शर्मा जी और राजपूत जी में अक्सर फ़ोन पर बात होती थी मगर बच्चों को इसकी खबर नहीं थी।

धीरे धीरे एक वर्ष बीत गया। अजीत को फिर किसी काम से जोधपुर जाना पड़ा। उसके मन में कई सवाल थे और वह मीरा से मिलने का अवसर भी ढूंढ रहा था। मौका मिलते ही वह बैंक मीरा से मिलने पहुँच गया। इस एक वर्ष में वह थोड़ा संभल गयी थी। उसने मीरा के पास पहुँच कर कहा " नमस्ते मैडम जी"।

"कैसे हैं आप " मीरा ने पूछा और उससे बैठने के लिए कहा । "आज अचानक कैसे आना हुआ आपका?"

"किसी काम से जोधपुर आया था । काम ख़तम होने के पश्चात जाने से पहले आपसे मिलने आ गया " अजीत ने कहा

मीरा ने अजीत के लिए चाय मंगवा ली। थोड़ी खामोशी के उपरान्त उसने पूछा "आपने उस बचपन वाली लड़की से शादी कर ली या अभी भी इंतज़ार कर रहे हैं?"

"कहाँ मैडम जी । मैं तो गांव मिलने भी गया था परन्तु वह लोग सपरिवार कहीं जोधपुर में ही बस गए हैं" अजीत बोला

"तो जोधपुर में ही मिल लें" मीरा ने कहा

"उनका पता ही नहीं मिला। बीसलपुर से जाते हुए उन्होंने अपना पता किसी को नहीं दिया है" अजीत ने बताया।

"क्या नाम बताया गांव का : मीरा ने पूछा।

"जी बीसलपुर । वहीँ एक श्री रामसिंह राजपूत जी के बेटी से विवाह का निर्णय हुआ था " अजीत ने बताया

"उनकी बेटी का नाम मीरा था? "मीरा ने पूछा

"जी उनकी बेटी का नाम मीरा ही था। बचपम में मैं और मीरा साथ साथ बहुत खुश रहते थे।"

"आपका नाम क्या है। मैंने आज तक पूछा ही नहीं "

"जी मेरा नाम अजीत है" अजीत ने कहा

मीरा के चेहरे पर परेशानी और ख़ुशी के मिले जुले भाव आ रहे थे। उसके मुख से शब्द नहीं निकल पा रहे थे। उसके इस तरह देखकर अजीत घबरा गया। अपने को संभाल कर मीरा बोली "अजीत मैं ही तुम्हारी बचपन वाली मीरा हूँ"। यह कहते कहते मीरा की आँखों से झर झर आंसू बहने लगे। अजीत की ख़ुशी का ढिकाना ही नहीं था।वह मीरा के साथ ढेर सारी बातें करना चाहता था। उसने राजपूत जी और उसकी माता जी के बारे में भी पूछा। मीरा भी उससे मिलकर मन का गुबार निकालना चाहती थी।

उसने अजीत के निवेदन पर अपने घर ले जाकर अपने माता पिता जी से मिलवाने के लिए भी हाँ कह दी। बैंक के काम का समय भी समाप्त हो चला था सो मीरा अजीत के साथ उसकी गाडी में अपने घर आ गयी। मीरा को किसी के साथ देखकर और मीरा के चेहरे पर ख़ुशी के भाव देखकर राजपूत जी और उनकी पत्नी दोनों विस्मित थे। मीरा ने जब अजीत के बारे में बतलाया तो उन्हें उससे मिलकर अत्यधिक ख़ुशी हुई। घंटो सबके बीच बातें होती रही। इतने समय के बाद मीरा को फिर से बोलते देखकर सबको बहुत संतोष हो रहा था। क्योंकि रात हो चुकी थी अतः उन्होंने अजीत से वहीँ रुक जाने के लिए कहा। अजीत ने भी रात में वापस जाना उचित नहीं समझा। उसने

अपने पिता जी को फ़ोन पर बता दिया की वह कल प्रातः ही यहाँ से चलेगा। रात में राजपूत जी व शर्मा जी में लम्बी बातचीत हुई। प्रातः नाश्ते पर राजपूत जी ने अजीत से कहा " अजीत क्या तुम्हे मालूम है कि बचपन में मैंने और तुम्हारे पिताजी ने तुम्हारा और मीरा का विवाह करने का संकल्प लिया था"। परन्तु कुछ परिस्थितयों और प्रारब्ध वश मीरा का विवाह कहीं और हो गया। शायद ईश्वर को वही मंजूर था।

"जी मुझे माँ ने बताया था और इसीलिए उसे बड़ों का एक वचन मानते हुए अब तक विवाह नहीं किया है" अजीत ने कहा।

मगर आप लोगों के चले जाने के बाद और आपका कोई पता नहीं होने से मैंने विवाह ही नहीं करने का निर्णय किया था। मीरा को भी इस बारे में कुछ पता नहीं है।

"बेटा अब हालात बदल गए हैं। क्या अब भी तुम मीरा से विवाह के लिए राजी हो?” राजपूत जी ने डरते डरते हुए पूछा।

"जी मैंने पहले ही बताया कि मैं मीरा के अतिरिक्त किसी और से विवाह नहीं करूँगा "अजीत ने उत्तर दिया। अजीत के उत्तर से राजपूत जी और उनकी पत्नी को जैसे जीवन मिल गया हो। "मगर इसके लिए आपको मेरे पिता जी से मिलकर उनकी सहमति लेनी होगी।' अजीत ने कहा।

राजपूत जी ने कहा “हम लोग पहले ही मिल चुके हैं और हम दोनों ही बस तुम्हारे और मीरा के मिलने की रह देख रहे थे।"। अजीत को बड़ा आश्चर्य हुआ कि पिता जी ने

कभी इस बात की चर्चा नहीं की। मीरा अजीत से मिलकर बहुत खुश तो थी मगर जब राजपूत जी ने उससे विवाह के लिए कहा तो वह सोच में पड़ गयी । उसे लगा कि उसकी वर्तमान मानसिक और शारीरिक अवस्था पर तरस खाकर अजीत विवाह के लिए राजी हुआ है । यह शंका उसने राजपूत जी को भी बताई । राजपूत जी ने अजीत से हुई सारी बातें उसे बतायीं । अजीत ने उसके सिवा किसी और से विवाह नहीं करने का निश्चय किया हुआ है। अतः उसकी शंका निर्मूल है। अंततः मीरा भी इस विवाह के लिए सहमत हो गयी। आज दोनों को साथ रहते वर्षो हो गए मगर मीरा के मन अब भी अक्सर यह कौंधता है कि मनुष्य तो मात्र खिलौना ही है । समस्त प्रयासों के उपरान्त भी फल तो ईश्वर के हाथ ही है और वही मिलता है जो आपकी नियति है।

Mr. Sushil Mehrotra was born & brought up at Kanpur where he did his post graduation in science. He is presently staying in Moradabad after his retirement as an executive from Indian Bank.

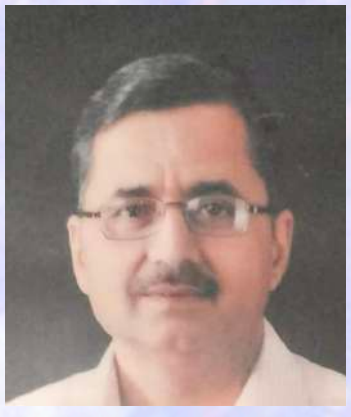

The sole meaning of life is to serve humanity!

Leo Tolstoy

IKMG thanks Mrs. Kamla Seth for donating 5 wheelchairs

खामोशी को जुबां देने की एक छोटी सी कोशिश

लेखिका - श्रीमती दीक्षा टंडन, गुरुग्राम

तू वक्त सा आगे बढ़ता चला गया, मै तेरे साथ का हर पल बटोरती चली गयी,

तू मुझे ढूंढ़ता चला गया और मै तुझमें समाती चली गयी।

तू लहरों सा बहता चला गया, मै किनारे की कश्ती सी बैठी रही,

तू हर सुबह की तरह घर से निकल आया, मै हर शाम की तरह इंतज़ार करती रही।

तू आँखें बंद करता रहा, मै सपने देखती चली गयी,

तू रेत सा फिसलता चला गया , मै तुझ में ठहरती चली गयी।

तू चाय सा गर्माता चला गया, मै चीनी सी तुझमे घुलती चली गयी,

तू हाथ छुड़ाता चला गया और मै तुझे थामती चली गयी ।

तू मुझे अपने कल मे ढूँढता रहा, मै तुझे अपना आज बनाने मे रह गयी,

तू साथ ढूंढता रहा, मै तेरी होती चली गयी।

तू कमाने मे रह गया , मै हमारे लिए जोड़ती चली गयी,

तू मकान ढूढ़ने मे रह गया और मै तेरे मकान को घर बनाती रह गयी।

Diksha Tandon is a professional trainer and deals in training, learning and development. She believes that learning has no age bar. She likes to pen down her thoughts, poems and stories.

एक पत्र

लेखिका - श्रीमती ममता सेठी भामरी, मेरठ

प्रिय यादें,

जो पल जिए थे, वो वक्त के धारे के साथ तुममें अर्थात यादों में बदल गए हैं, जिन्हें एक पोटली में बंद कर रख ली है धरोहर।

आज तुम कैद हो,

दिल की गहराई में...

मेरी सोच में...

अंकित हो मेरी डायरी के पन्नों में, मेरी यादों के रूप में।

घुटता है कभी-कभी दम मेरा भी सोच कर तुम्हे और जब भर जाता है, तो फटता भी है एक ज्वालामुखी के लावे की तरह दूर दूर तक,,, अपने निशां छोड़ता हुआ।

जब जब तुम्हे छूने की कोशिश करती हूं, अधरों पर मुस्कान की रेखाएं गहरी से और गहरी होती जाती हैं। तो कभी आँखों को नम कर जाती हैं। पता नही चलता कभी, सांझ कब ढ़ली तो कभी भीगा तकिया बताता है कि रात कितनी लंबी थी।

शून्य को घूरते हुए कितने बीते पलों को आँखो के परदे पर दुबारा जी लेती हूं और पहुंच जाती हूं, उसी समय, उसी जगह और

करती हूं महसूस फिर से वही बीता वक्त।

टूटता है जैसे ही भ्रम का माया जाल, तड़फ कर रह जाती पानी बिन मछली की तरह।

हंसती मुस्कुराती यादों के क्षण कब मोती बन दिल से निकल कर आँखों के रास्ते कपोलों से लुढ़क कर आंचल को भिगो जाते हैं।

तो कभी जिव्हा से निकले किसी अपने के व्यंग बाण आज भी कानों में घुले गर्म लोहे के घोल सा महसूस होता है, जो कनपटी को सुर्ख करते हुए दिल और दिमाग में एक युद्ध छेड़ जाते हैं।

यादें तुम सचमुच बेबाक हो, किसी ना किसी बहाने आकर कभी जख्मों को हरा कर जाती हो, तो कभी अनुभवों की एक पोटली पकड़ा जाती हो, जिसे मैं दिल की एक संदूकची में इकठ्ठा करती जाती हूँ।

बस बहुत हुआ यादों,, अब न आना, संदूकची भर गई है, अनुभवों को इकट्ठा करते करते।

इस ज़माने में इन अनुभवों का कोई मोल भी नही रहा है। कोई लेना नही चाहता। सब अपनी अपनी जिंदगी जी रहे हैं, अनुभवों को इकट्ठा करते करते।

इतिहास के पन्ने भर रहे है, उन्ही दोहराई गतिविधियों से।

ममता सेठी भामरी मूल रूप से उत्तर प्रदेश के जिले मेरठ से हैं। एक शिक्षक होने के नाते वह अबकस और वैदिक गणित पढ़ाती हैं। वह Cuemath की बिजनेस पार्टनर भी हैं। लिखने का शौक होने के कारण कविता, गजल, लघु कहानियां और संस्मरण आदि लिखती रहती हैं और एक सामाजिक संस्था *मिशन शिक्षण संवाद* से भी जुड़ी हैं।

हमारा वर्तमान

लेखिका - श्रीमती नीता कपूर, कानपुर

अतीत सुखद हो या दुखद

यादों में रहता है।

कभी रुलाता है तो कभी हंसाता है।

दिल कहता है भूल जाओ

मन वहीं चला जाता है।

दिल कहता है आगे बढ़ो

मन कहता है पीछे चलो।

मैं कहती हूं दिल की सुनो

मन की मत मानो।

मन तो चंचल है

पीछे जाकर आगे बढ़ने नहीं देता।

मन को यूं ही दुःखी कर देता

जब मन दुखी हो जाता

तो किसी की नहीं सुनता

अपनों को भी वैरी समझता

अपने भी दुश्मन बन जाते।

क्यों हम अपने अतीत में जाते

अतीत जैसा भी हो बीत ही जाता है।

जीवन वर्तमान में जीना सिखाता है।

वर्तमान को सुखद बनाओ

भविष्य किसने देखा है।

ये तो ऊपर वाले ने रच रखा है।

तो उसके रचे पर क्यों शक करना

अपना वर्तमान क्यों ख़राब करना।

मन को वश में रखो, अतीत को मत देखो

वर्तमान में जियो, जीवन सुखमय बनाओ।

Mrs. Nita Kapoor has been a teacher for 30 years, is a proficient tabla player and enjoys music, singing and poetry.

बस इतनी सी आरजू

लेखिका - श्रीमती रुचि ग्रोवर, शाहजहाँपुर

लौट कर न आना बीते हुए वर्ष तेरी वो यादें पुरानी,

ऐ वक़्त फिर से न करना तू अपनी मनमानी,

न करना किसी को अपनो से दूर,

तोड़ देना तुम मातम का गुरूर,

इस बार नव वर्ष के साथ ऐ वक़्त तू देना ऐसी दस्तक,

कि झुक जाये सब आँधियों के मस्तक,

मिटा देना अंधकार और कर देना उजियाला,

पहन कर आना तुम खुशियों की दुशाला,

और इस बार तू ज़रा आहिस्ता से अपना कदम बढ़ाना,

क्योंकि उजड़ी हुई बगिया को तुम्हें फिर से है महकाना,

तू लगा देना सब जख्मी दिलो पर मरहम,

उठा लेना फिर से अपनी कलम,

और लिख देना एक नया इतिहास,

सबके मन में भर देना एक नया विश्वास,

लाना तुम खुशियों भरा पैगाम अपना,

हर दिल देखें एक सुनहरा सपना,

उन सपनों को करके साकार,

कर देना तुम देश की तरक्की इस बार,

इस बार नव वर्ष, तुझसे बस यही गुजारिश और उम्मीद करते हैं हम,

चारों तरफ हो खुशियाँ ही खुशियाँ और ना हो कोई गम.....

रुचि ग्रोवर शाहजहॉपुर, उत्तरप्रदेश की रहने वाली हैं और पिछले 8 वर्ष से समाजिक विषयों पर लिख रही हैं ।

IKMG Matrimonial Group

जो खत्री परिवार अपने बच्चों के लिए उपयुक्त सजातीय रिश्ता तलाश कर रहे हैं उनसे आग्रह है कि IKMG MATRIMONIAL GROUP से जुड़ें। हमारे ग्रुप में उत्तर प्रदेश, दिल्ली, मुंबई, नोएडा, राजस्थान, पंजाब, मध्यप्रदेश, कोलकाता, हैदराबाद, अहमदाबाद, बैंगलोर आदि शहरों के सदस्य जुड़े हुए हैं।

इसी के साथ कुछ खत्री परिवारों के लड़के विदेश में कार्यरत हैं, जैसे अमेरिका, लंदन, जर्मनी आदि, जो परिवार विदेश में कार्यरत लड़कों से रिश्ते के इच्छुक हों वे भी सम्पर्क कर सकते हैं।

जिन लड़के/लड़कियों की शिक्षा कम है व उम्र अधिक हो गई है किन्तु विवाह नहीं हो सका वे भी आमंत्रित हैं।

तलाकशुदा/विधवा भी पुनर्विवाह के लिए ग्रुप से जुड़ सकते हैं।

ग्रुप से जुड़ने के लिए अपना नाम व शहर का नाम whatsapp नंबर 7309121921 पर भेजें या ईमेल dineshtandon055@gmail.com पर भी भेज सकते हैं।

RAJ KHANNA, CHAIRMAN

DINESH TANDON, MODERATOR

IKMG LTD

Connecting people who care..

Matrimonial group

KITCHEN

Tales

मिर्ची वड़ा

श्रीमती मीनाक्षी चुग द्वारा बनाने की विधि

सामग्री

- 6-7 मोटी हरी मिर्च
- भरावन के लिए।
- 3-4 उबले आलू
- ½ चम्मच जीरा
- ¼ चम्मच अजवाइन
- ¼ चम्मच हींग
- 1½ चम्मच कुटा साबुत धनिया
- 1 चम्मच बारीक कटी अदरक
- 1 चम्मच बारीक कटी हरी मिर्च
- 1/3 चम्मच लाल मिर्च पाउडर
- 1/3 चम्मच हल्दी
- ½ चम्मच सूखा धनिया पाउडर
- ½ चम्मच गरम मसाला
- 4-5 चम्मच बारीक कटा हरा धनिया
- नमक स्वाद अनुसार
- 3-4 चम्मच तेल
- बेसन के घोल के लिए
- 1 कटोरी बेसन
- नमक स्वाद अनुसार
- ⅓ चम्मच मिर्च
- तलने के लिए तेल

बनाने की विधि

सबसे पहले हरी मिर्च को बीच में से लंबा चीरा दें।

उसके सभी बीज चम्मच के पीछे वाले हिस्से की सहायता से निकाल लें।

भरावन के लिए सबसे पहले एक कढ़ाई में 3 से 4 चम्मच तेल ले

उसमें जीरा, हींग, अजवाइन, कुटा हुआ सूखा धनिया, बारीक कटी अदरक व बारीक कटी हरी मिर्च डालकर 1 मिनट भूनें।

अब इसमें नमक, मिर्च, सूखा धनिया, हल्दी व गरम मसाला डालकर अच्छे से मिलाएं।

मसालों में सुगंध आने पर उबले आलू को हाथ से मसल कर कढ़ाई में डालें।

अच्छे से मिलाकर 5 मिनट तक ढ़क कर पकाएं।

अब इसमें बारीक हरा धनिया काटकर मिलाएं भरावन तैयार हैं।

एक अलग कटोरी में बेसन, नमक व मिर्च डालकर मुलायम और गाढ़ा पेस्ट तैयार करें।

अब हरी मिर्च के अंदर आलू के भरावन को अच्छे से भरें।

एक अलग प्लेट में थोड़ा सा बेसन लें उसमें नमक और मिर्च डालें।

अब हरी मिर्च के ऊपर सबसे पहले सुखा बेसन लगाएं

फिर घोल वाले बेसन में डुबोकर तलें।

सुनहरा होने पर मिर्च को निकालें।

अब हरी मिर्च को बीच में काटकर प्याज नींबू धनिया लगाएं और गरम-गरम सर्व करें।

Meenakshi Chugh owns a cooking based youtube channel named ‘Apna Chokha’ and gives tuition for primary classes as well as host camp for handwriting improvement (Hindi and English), drawing & colouring etc.

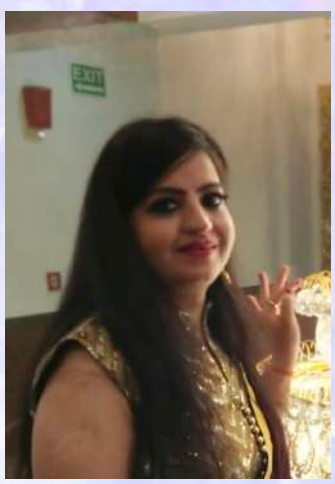

The Art Corner

Princess

Artist: Ms. Pranvi Seth, Shahjahanpur

Pranvi Seth lives in Shahjahanpur UP . She is 8 years old and studies in class 4. She enjoys to spend her free time in sketching , dancing and singing.

Thanos

Artist: Devang Khatri, Agra

Devang Khatri is 6 years old and studies in Class 1I He enjoys drawing and playing both indoor & outdoor gamesI

patrika@ikmgglobal.org

+91 9958363661

Printer & Publisher: IKMG Ltd.
Editor: Mr. Sharad Mehrotra
Proof Reading: Mr. Manoj Puri

IKMG reserves the rights for reproduction and distribution of the published content
IKMG does not support plagiarism and any such act is the sole responsibility of the writer